www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

अच्छे विचार

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अच्छे विचार

एक बहुत ही प्रसिद्ध विद्वान थैकर के सरल से सत्संग का नाम सुनकर लाखों की भीड़ जमा हो गई। विद्वान मंच पर पहुँचे। उन्होंने ऊँचे स्वर में कहा—"भाइयो! (१) अपने से अच्छे लोगों की संगति करो। (२) अच्छी पुस्तकें पढ़ो। (३) अच्छाई का आदर करो। इन तीन सूत्रों पर ही जीवन का सारा सौभाग्य निर्भर है। इन्हीं सूत्रों को महापुरुषों ने अपनाया। हम लोगों के विकास और उज्ज्वल भविष्य का भी यही रास्ता है।"

दो मिनट में अपनी बात कर लेने के उपरांत उन्होंने भाषण का उपसंहार किया और फिर से कहा—"अच्छी शिक्षाएँ थोड़ी ही हैं। उन्हें बार-बार लंबे समय तक सुनने की अपेक्षा जीवन में धारण करने का महत्त्व कहीं अधिक है। अच्छा, अलविदा।" सीधे-सादे विचार लोगों की समझ में जल्दी आ गए। ढेरों आकर्षक भाषण से जो लाभ न हो सका था वह इस सधे हुए प्रयास से संभव हो गया।

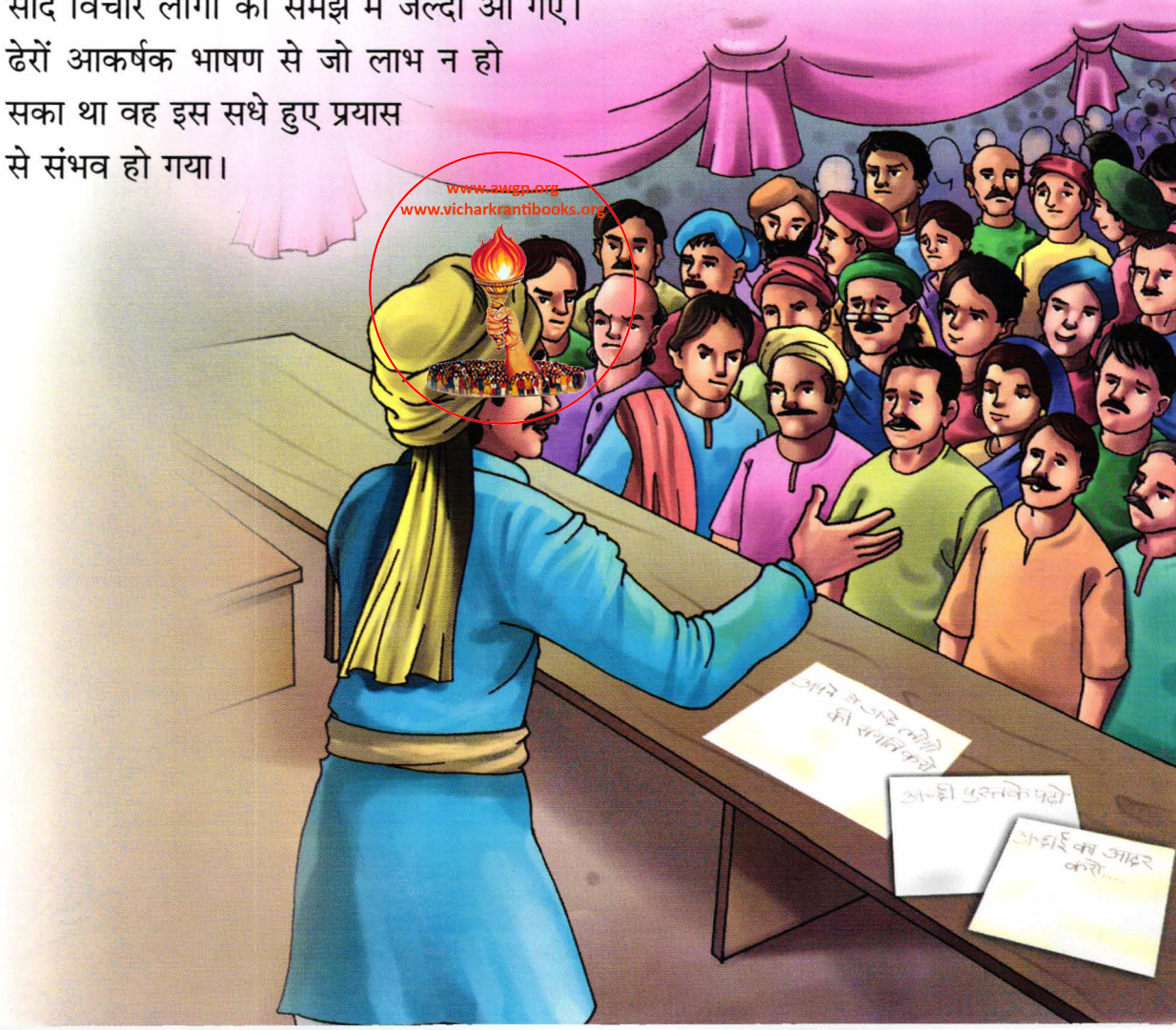

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसान की निष्ठा

सृष्टिकर्त्ता ने एक दिन सोचा कि धरती पर जाकर कम से कम अपनी सृष्टि को तो देखा जाए। धरती पर पहुँचते ही सबसे पहले उनकी दृष्टि एक किसान की ओर गई। वह कुदाली लिए पहाड़ खोदने में लगा था। सृष्टिकर्त्ता प्रयत्न करने पर भी अपनी हँसी न रोक पाए। उसे इतने बड़े कार्य में केवल एक व्यक्ति को लगा देख और भी आश्चर्य हुआ।

वह किसान के पास गए, उन्होंने कारण जानना चाहा, तो सीधा उत्तर था—"महाराज! मेरे साथ कैसा अन्याय है? इस पर्वत को अन्यत्र स्थान ही नहीं मिला। बादल आते हैं, इससे टकराकर उस ओर वर्षा कर देते हैं और पर्वत के इस ओर जो मेरे खेत हैं, वह सूखे ही रहते हैं।" "क्या तुम इस विशाल पर्वत को हटा सकोगे?"—स्रष्टा ने किसान से पूछा। किसान ने कहा—"क्यों नहीं, मैं इसे हटाकर ही मानूँगा, यह मेरा दृढ़ संकल्प है।"

सृष्टिकर्त्ता आगे बढ़ गए, तो उन्होंने अपने सामने पर्वतराज को याचना करते देखा। वह हाथ जोड़े गिड़गिड़ा रहा था—"विधाता! इस संसार में सिवाय आपके मेरी रक्षा कोई नहीं कर सकता।" स्रष्टा ने पूछा—"छोटे से किसान के कर्म से इतने क्यों घबरा रहे हो?" तो पर्वत ने कहा—"आपने उसकी आस्था नहीं देखी। मेरा अनुभव है कि निष्ठावान के संकल्प कभी अधूरे नहीं रहे, अवश्य पूरे होते हैं।"

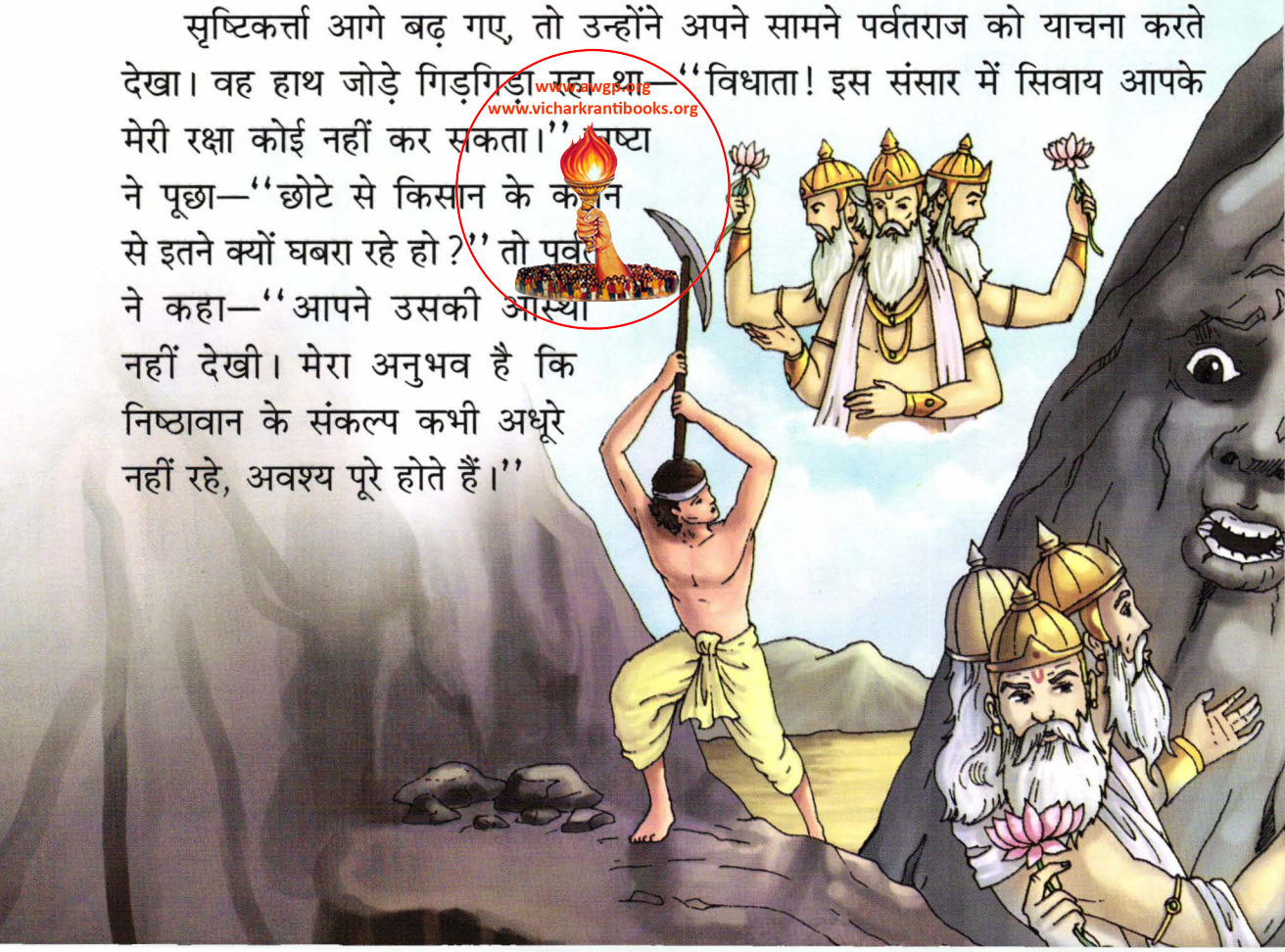

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अहंकार से सर्वनाश

एक पेड़ पर एक सांप रहता था। पेड़ के नीचे नेवले की सुरंग थी। नेवले और सर्प ने किसी का कुछ बिगाड़ा न था, तो भी अहंकारवश वे एक दूसरे को नीचा दिखाने के फेर में रहते थे। एक दिन आमना-सामना हुआ, तो दोनों गुँथ गए। किसी ने हार न मानी और दोनों ही घायल हुए खून में सने शरीर से रेत में उलटे लेट गए।

इतने में एक वन का शेर उधर से आया। उसने सामने पड़े शिकारों को देखा और उन दोनों को सहज ही खा लिया।

अहंकार ने दोनों के प्राण लेकर पीछा छोड़ा।

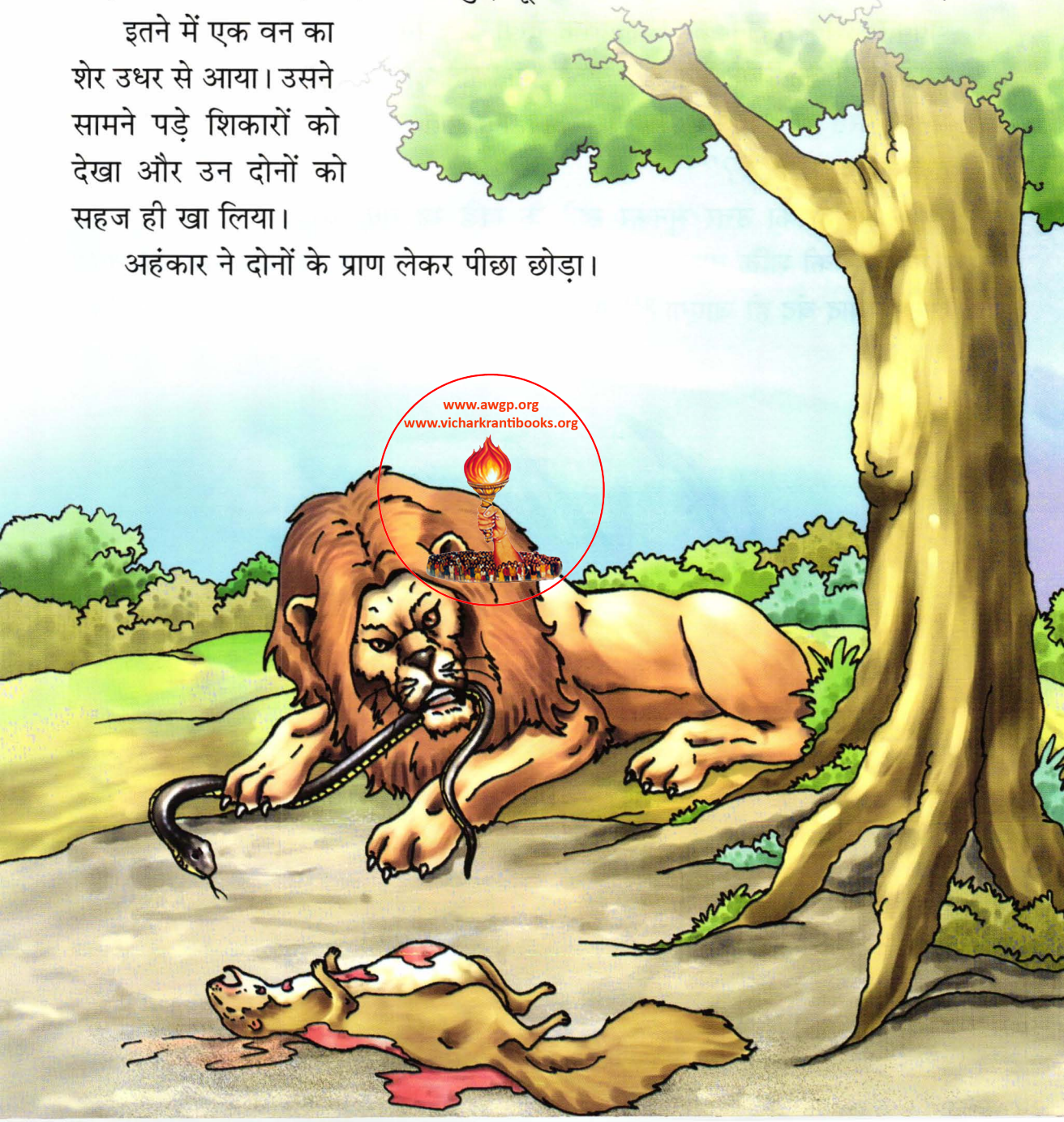

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वास की शक्ति

एक दिन तूफान आया। तूफान से गेलीलो झील का पानी ऊँचा उछलने लगा। जो नावें चल रही थीं, वे बुरी तरह थरथराने लगीं। लहरों का पानी जब नाव में पहुँचने लगा तो यात्री डर से काँपने लगे।

एक नाव में जीसस क्राइस्ट निश्चिंत सोए पड़े थे। साथियों ने उन्हें जगाया। जगकर उसने तूफान को ध्यानपूर्वक देखा और फिर साथियों से पूछा—"आखिर इससे डरने की क्या बात है? तूफान भी आते ही हैं, नावें भी डूबती ही हैं और मनुष्य मरते ही हैं। इसमें क्या ऐसी अनहोनी बात हो गई, जो आप लोग इतनी बुरी तरह हड़बड़ा रहे हैं?"

सभी उसका उत्तर सुनकर खड़े के खड़े रह गए। बेखबर व्यक्ति ने कहा—"विश्वास की शक्ति तूफान से बड़ी है। तुम विश्वास क्यों नहीं करते कि यह तूफान क्षणभर बाद बंद हो जाएगा?" भयभीत यात्रियों के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना उस

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अलमस्त ने आँखें बंद कीं और अपने मन के अंदर ध्यानमग्न हो उन्होंने पूरी शक्ति के साथ कहा—"शांत हो जा, मूर्ख!" तूफान तुरंत शांत हो गया।

सहमे हुए नटखट बच्चे की तरह तूफान रुक गया। नाव का हिलना बंद हुआ तो यात्रियों ने चैन की साँस ली। अब उस अलमस्त यात्री जीसस क्राइस्ट ने साथियों से कहा—"दोस्तो, विश्वास बड़ा है। तूफान को तुमने उससे भी बड़ा क्यों मान लिया था?"

भयंकर विपत्ति में भी हमें विश्वास और धैर्य नहीं खोना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाथी और अंधे

किसी ने जन्मांध खड़े अंधों के समूह से पूछा—"सामने खड़े हाथी को छूकर बताओ हाथी कैसा होता है?" एक ने हाथी की पूँछ पकड़ी, दूसरे ने कान, तीसरे ने पैर, चौथे ने दाँत और पाँचवे ने पीठ को छूकर देखा। पूँछ को पकड़ने वाले ने रस्सी जैसा, कान को छूने वाले ने सूप जैसा, पैर के संपर्क में आने वाले ने खंभे जैसा, दाँत वाले ने डंडे जैसा, पीठ को छूने वाले ने विशालकाय पत्थर जैसा बताया। जिसको दिखाई देता था वह व्यक्ति उनकी बात सुनकर हँसा। सभी अंधों ने एक-एक अंग को छू करके यह समझ लिया कि उन्होंने हाथी देख लिया। पर पूरे हाथी का स्वरूप किसी को मालूम न हो सका।

इसी प्रकार परब्रह्म के एक अंश को ही हम देख पाते हैं, उसकी किन्हीं-किन्हीं शक्तियों का अनुभव कर पाते हैं। ऋषिगणों ने इसी विराट अनंत स्वरूप को देखकर 'नेति-नेति' कहा है।

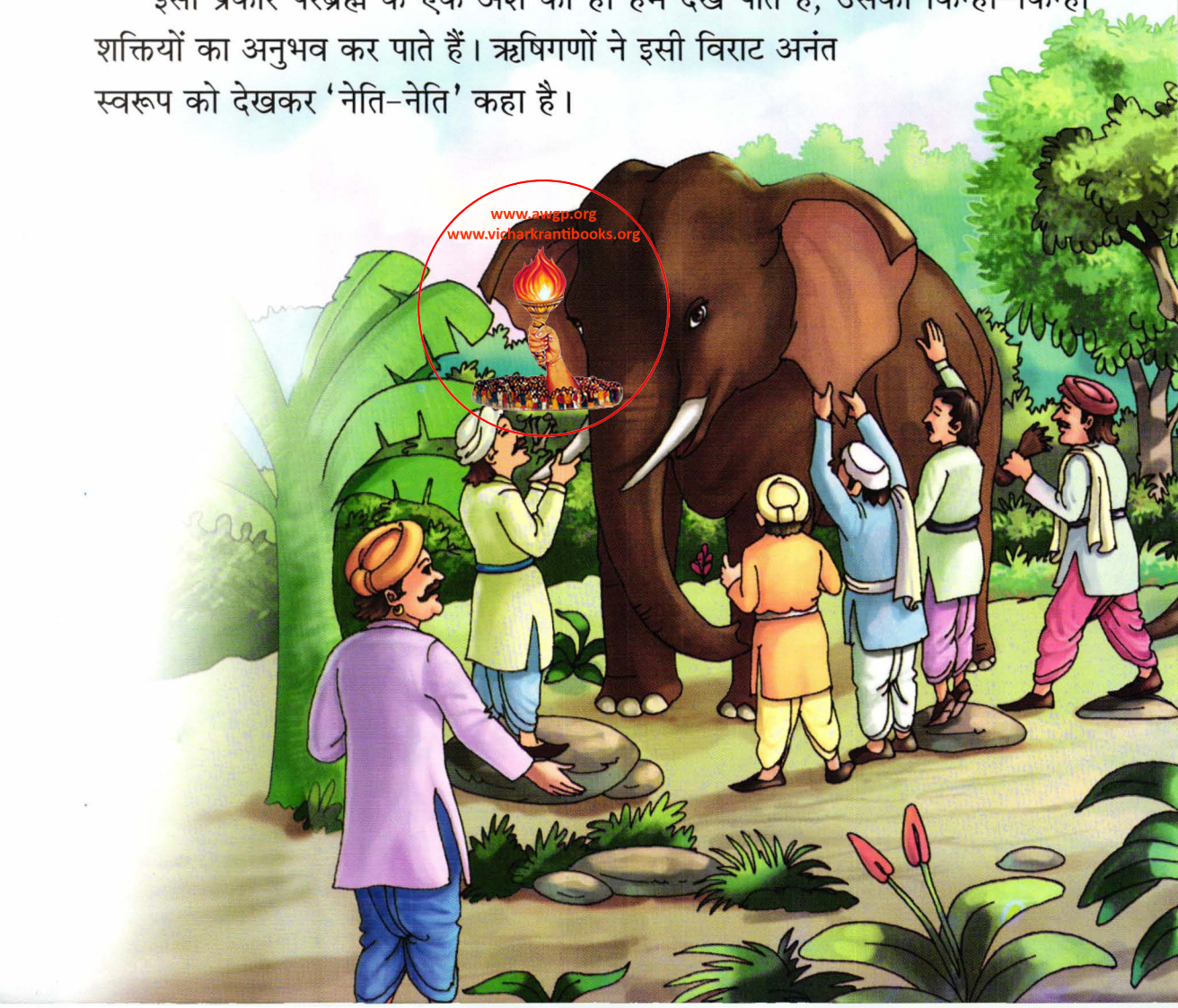

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नारी के सम्मान की रक्षा

ढिकारी का किला जब जीत लिया गया और वहाँ की रानी मलबाई को बंदिनी बनाकर शिवाजी के सामने लाया गया। दरबार में आने पर रानी इस व्यवहार को अपमान समझकर शिवाजी से बोलीं—"आप मुझे मृत्युदंड दे दें, बंदिनी बनना मुझे सहा नहीं जाएगा।" शिवाजी सिंहासन से उतरकर बोले—"आप जैसी वीर स्त्रियों का मैं अपमान नहीं कर सकता। आज से तुम मेरी माता जीजा बाई के समान मेरे पास रहोगी।" मलबाई की आखों में स्नेह के आसूँ भर आए। उन्होंने कहा—"शिवाजी तुम सचमुच छत्रपति हो। तुम अवश्य ही धर्म और देश की रक्षा करोगे।"

दूसरों के सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा करने वालों का सम्मान ईश्वर बनाए रखता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपनी शक्तियों को पहचानों

एक माली के लड़के बड़े आलसी थे। वे काम-काज से जी चुराते और व्यर्थ की बातों में अपना समय नष्ट करते रहते। जब वह मरने लगा तो उसने लड़कों को बुलाया और कहा—"तुम आलस्य में पड़े रहकर घर में जो कुछ है उस सबको बरबाद कर दोगे। पर मैंने तुम्हारे भविष्य का ध्यान रखा है और बाग में प्रत्येक पेड़ के नीचे थोड़ा-थोड़ा सोना गाड़ रखा है, जब जरूरत हो तब निकाल लेना।" यह कहकर माली मर गया। घर में जो थोड़ी सी पूँजी थी वह समाप्त हो गई। लड़के भूखों मरने लगे। उनने सोचा, चलो पेड़ों के नीचे से सोना निकालें। जुट गए और एक-एक करके सब पेड़ों

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को खोदते गए। पर किसी के नीचे कुछ न निकला। लड़के जानते थे कि हमारा बाप कभी झूठ नहीं बोलता था। फिर भी उसकी यह सोना निकलने वाली बात कैसे झूठ निकली इसका उन्हें आश्चर्य था। कुछ दिन बाद वर्षा हुई पेड़ों के नीचे मिट्टी खुद जाने से जड़ों में काफी पानी पहुँचा और हर पेड़ ने भारी तादाद में फल दिए। आमदनी इतनी हुई कि हर पेड़ के नीचे सोना निकलने वाली बात सच हो गई। उनको आमों से बहुत सा धन प्राप्त हो गया। वे धनवान बन गए।

इसी तरह हर व्यक्ति अपनी शक्तियों और सामर्थ्य के संबंध में अनजान रहने के कारण गया-गुजरा जीवन बिताता है और यह मान बैठता है कि उनके भाग्य में उतना ही लिखा है। उसकी योग्यता इन्हीं परिस्थितियों में रहने की है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिद्दी आदमी

एक नदी में नाव पड़ी थी। उस नाव पर बैठकर यात्री पार जाते-आते थे। एक यात्री बड़ा जिद्दी था। बोला—"नाव में बैठकर पार होने की बात सभी कहते हैं, मैं घाट पर खाली नाव में बैठूँगा और सहज ही पार हो जाऊँगा।" सबने समझाया कि माँझी, डाँड, किराये की व्यवस्था रहने पर ही पार हुआ जा सकता है, पर जिद्दी आदमी नाव को ही सब कुछ मानता था, सो एक खाली खड़ी नाव में बैठकर पार जाने के लिए अड़ गया। नाव थोड़ी ही दूर चलकर उलट गई और नाव तथा यात्री दोनों ही डूब गए।

भगवान का नाम नाव तो है, पर उसके साथ जीवन-परिष्कार और सुयोग्य गुरु का मार्गदर्शन भी चाहिए। बिना गुरु के जीवन की नाव भी पार नहीं होती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंदी पोखरी

दो छोटी-छोटी पोखरी थीं। इसका पानी उसमें, उसका पानी इसमें होता रहता था। कोई उनका पानी प्रयोग नहीं करता था। पानी में काई और कीड़े पड़ गए थे।

उनका दु:ख सुनकर प्रभु ने कहा—"पूर्व जन्म में तुम दोनों सगी बहनें भी थीं और देवरानी-जेठानी भी। दोनों ही स्वार्थी थीं। कोई दान-पुण्य परमार्थ के लिए कहता तो बड़ी बहन, छोटी बहन को दान का सबसे श्रेष्ठ पात्र कहकर उसे दे आती थी। इसी प्रकार छोटी बहन, बड़ी बहन को दान दे देती थी। दोनों की स्वार्थ भावना अपने साधन अपने ही अधिकार क्षेत्र में रखने के ताने-बाने बुनती रहती थी। वही प्रवृत्ति तुम्हारे साथ अभी भी लगी है। पानी तुम्हारे स्वार्थ भावना जैसा ही दुर्गंध युक्त हो गया है। एकदूसरे की सीमा में ही चक्कर काटता है। स्वार्थ के ऐसे ही परिणाम निकलते हैं।"

अपने सगे-संबंधियों को दी जाने वाली सहायता दान नहीं कही जाती। जो दीन-दुखी, असहायों की सेवा करे, वही दान कहा जा सकता है।

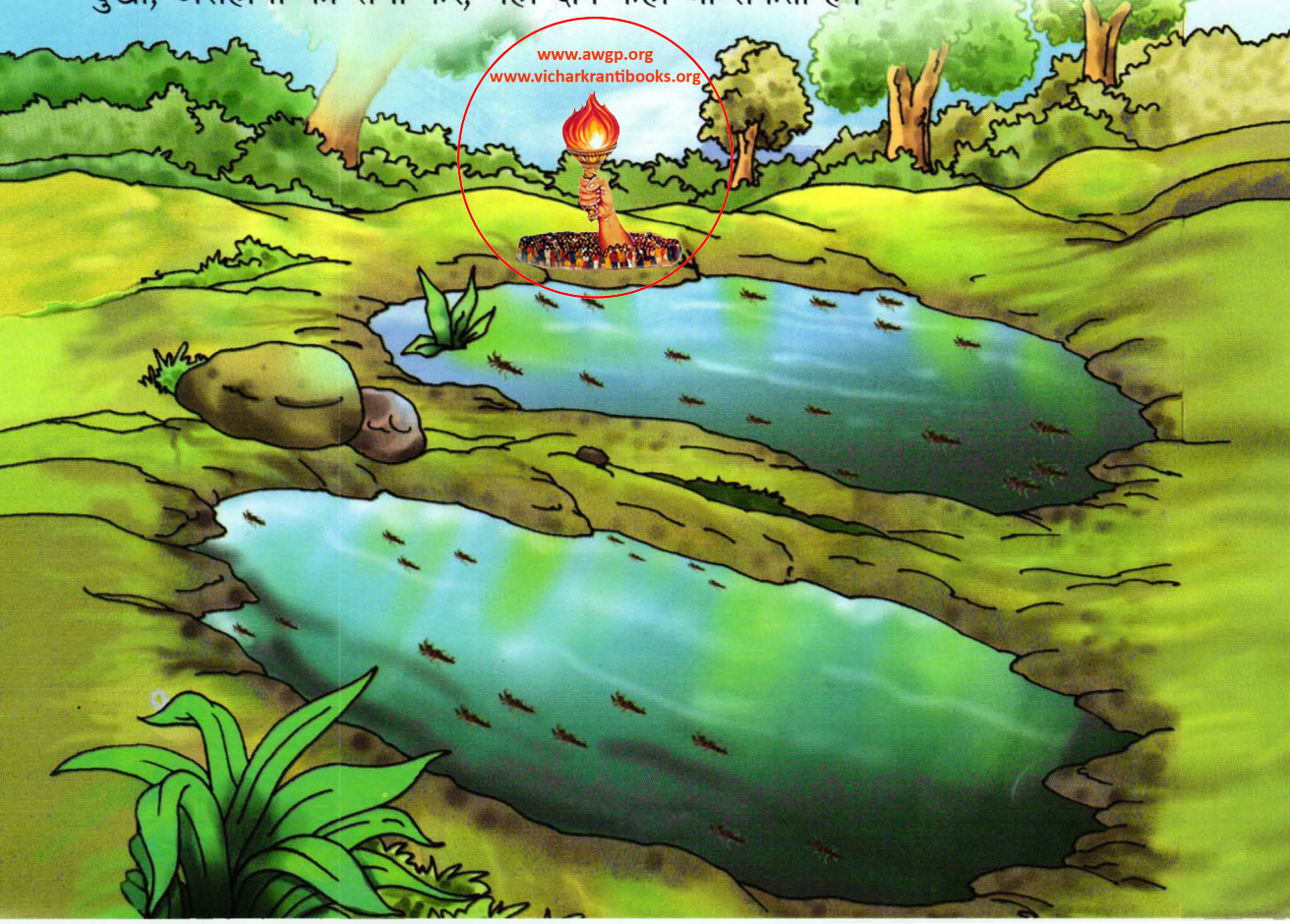

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन का कल्पना जगत

एक लड़की को सपने में शेर दिखाई देता, वह बेतरह डर जाती। हालत बिगड़ते देखकर उसे मनश्चिकित्सक के पास ले जाया गया।

सारी बात समझने के बाद मनोविज्ञानी ने लड़की से कहा—''वह शेर तो मुझे भी रोज दिखाई देता है। वह तो बहुत भला है। काटता बिलकुल नहीं। खिलाड़ी प्रकृति का होने के कारण वह साथी ढूँढ़ता है और इसीलिए सपने में आता है। अबकी बार आवे तो तुम उससे दोस्ती जोड़ना। फिर देखना कितना भला और हँसोड़ है वह।''

लड़की का समाधान हो गया, वह प्रसन्न होकर लौटी। सपना तो अब भी आता, पर वह रात में हँसती-मुस्काने लगती। डर मन से बिलकुल चला गया।

मन में सदा अच्छे विचार लाने चाहिए जिससे स्वप्न भी दिखे तो वह भी अच्छा ही हो।

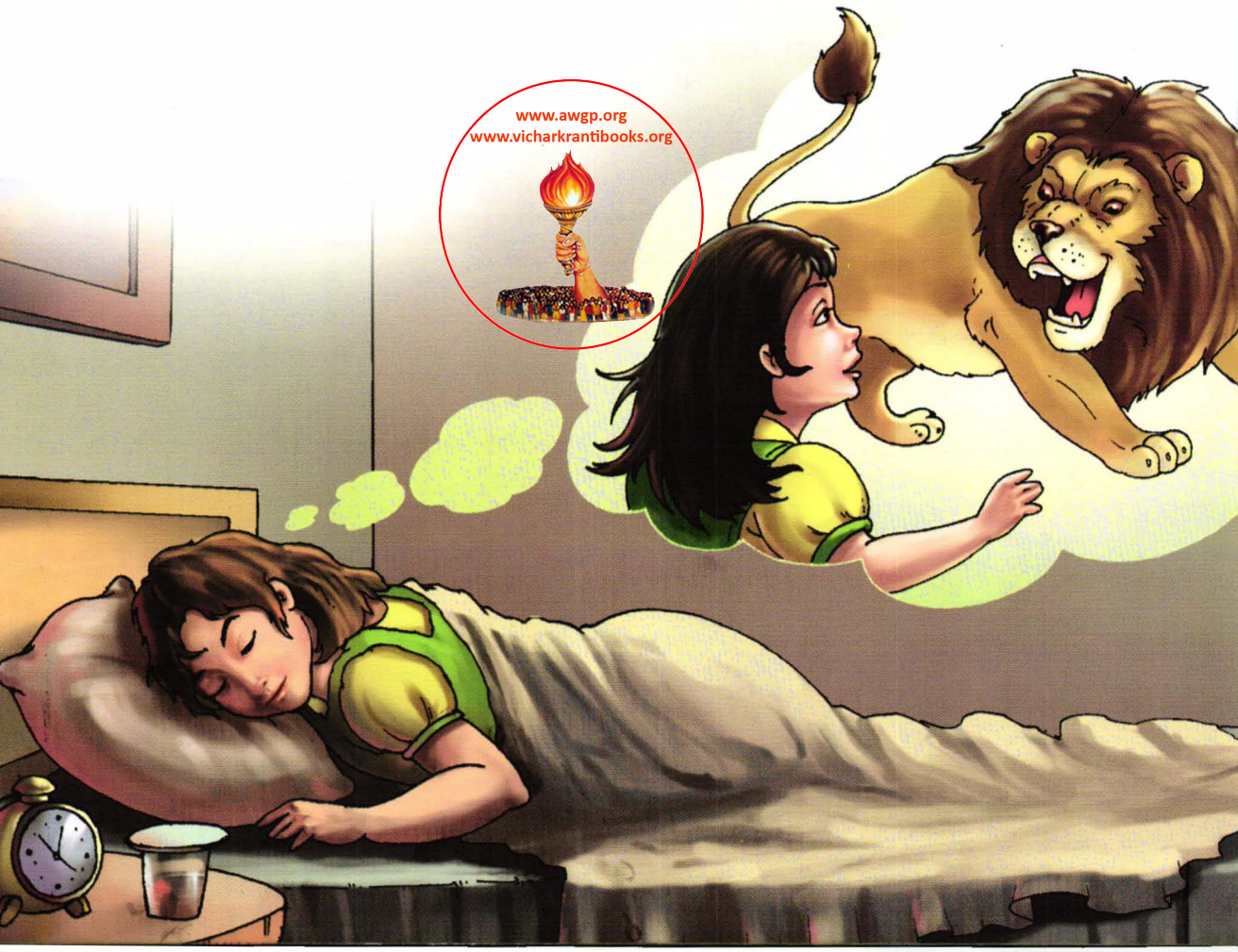

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुआँ गहराई में नहीं खोदा

किसी व्यक्ति ने सुना—बीस फुट मिट्टी खोद लेने से पानी निकल आता है, कुआँ बन जाता है। वह कुआँ खोदने में लग गया। बीस की जगह पच्चीस फुट खुद गया फिर भी पानी नहीं निकला। वह व्यक्ति उस आदमी के पास गया और पानी न निकलने की शिकायत की। अगले दिन उस व्यक्ति ने जाकर देखा तो पाया कुआँ खोदा तो गया पर गहराई में नहीं लंबाई में। उसने कहा—"भाई! इतना परिश्रम करने की अपेक्षा पहले विधि पूछ लेते तो अच्छा था। ज्ञान की सार्थकता उसे पूरी तरह समझ लेने में ही है। अधूरी वार्त्ता सुनकर कार्य आरंभ करने वाले धोखा ही खाते हैं।"

काम की जब भी योजना बनाई जाए, उसे अच्छी तरह सोच-समझ लेना चाहिए। शेखचिल्ली जैसी कपोल-कल्पना तो अनगिनत कर सकते हैं पर जीवन में वही सही उतर पाते हैं जो कदम सँभाल-सँभालकर रखते हैं, एक भी पल गँवाते नहीं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विनम्र बनो

शाल्मली का एक वृक्ष था—बहुत बड़ा, ऊँचा भी और चौड़ा भी। पास में छोटे-छोटे झाड़-झंखाड़ भी उगे हुए थे। एक साधु उधर से निकले। दोनों के कुशल समाचार पूछे, वृक्ष से भी और झाड़-झंखाड़ से भी । दोनों के बीच परस्पर संबंध कैसे हैं? इस बात को भी उनने वृक्ष से ही पूछ लिया। विशाल वृक्ष ने अपने बड़प्पन की विस्तारपूर्वक प्रशंसा की और सौभाग्य सराहा। साथ ही पड़ोसी झाड़ियों का मजाक उड़ाया। झाड़ियाँ क्या कहतीं। उन्होंने अपनी स्थिति पर संतोष किया और कहा—"जिस स्थिति में भी वे हैं, प्रसन्न हैं। बड़े प्राणियों को न सही, छोटों को ही छाया और आश्रय प्रदान करती हैं।"

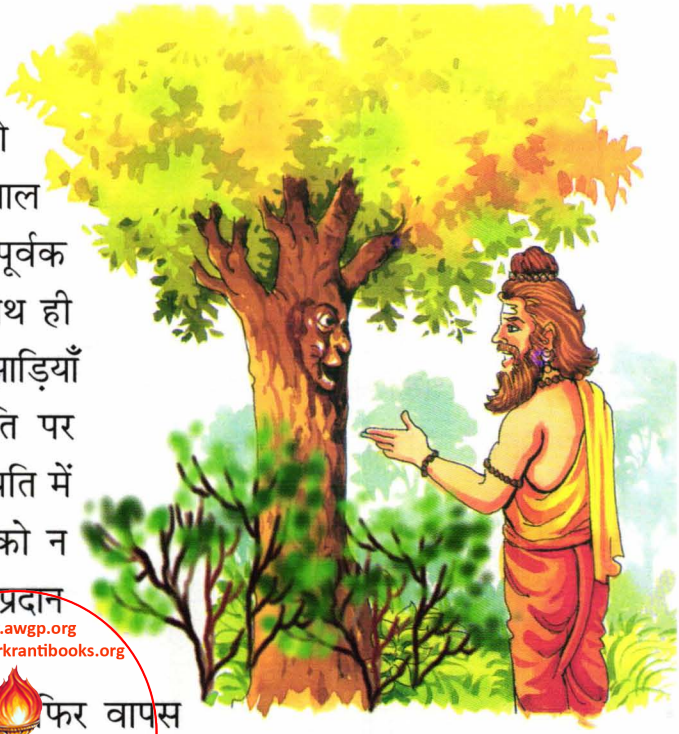

बहुत दिन बाद साधु इसी रास्ते फिर वापस लौटे। वृक्ष तो उस स्थान पर था ही नहीं और झाड़ियाँ बहुत दूर तक फैल गई थीं। पूछा तो पता चला कि एक बा[illegible]तूफान आया था। उसकी चपेट में अनेक वृक्ष आए और वह शाल्मली भी उसी चक्रवात में टूटकर गिर गया। साधु ने दुःख मनाया, साथ ही झाड़ियों से पूछा—"आप लोग उस कुचक्र से कैसे बच गए?" झाड़ियों ने कहा—"देव! हमें अपने छोटे होने का पता था, सो तूफान आते ही सिर झुका लिया, तूफान ऊपर से उतर गया। वृक्ष अकड़ा रहा और अंधड़ से टकराकर धराशायी हो गया।"

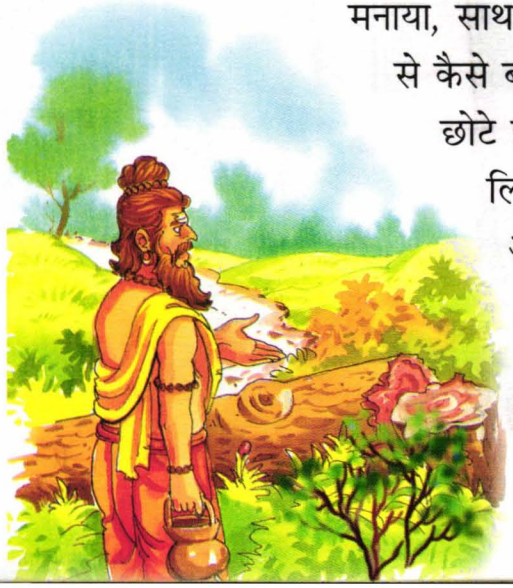

अतः अहंकार को समाप्त कर, उसके स्थान पर व्यक्ति विनम्र बनने का प्रयास करे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पढ़ लेना ही पर्याप्त नहीं

छात्रों में आरुणि विशिष्ट मेधावी था और आज्ञाकारी भी। वह तत्त्वज्ञानी बनना चाहता था। कुलगुरु उद्दालक भी इसके लिए उत्सुक थे। उचित मूल्य पर उचित उपलब्धि का सिद्धांत अपनाया गया। सस्ते में बहुमूल्य वस्तु पाने का कोई प्रचलन इस संसार में है भी तो नहीं। आरुणि को सौ दुबली गायें दी गईं और कहा—''उन्हें हजार तक बढ़ाएँ और तगड़ी करके दिखाएँ। उसके उपरांत तत्त्वज्ञान की दीक्षा मिलेगी।''

आरुणि गायों के झुंड को लेकर चल पड़ा। घास-पानी की उपयुक्त जानकारी प्राप्त करता और झुंड को एक जगह से दूसरी जगह ले जाता। सुरक्षा का प्रबंध करता और आएदिन की समस्याओं से जूझता। यही क्रम चलता रहा और दस वर्ष में गायें सौ से बढ़कर हजार हो गईं। झुंड को लेकर वह गुरुकुल को वापस लौट आया। आरुणि के चेहरे पर ज्योतिर्मान ब्रह्मतेजस् उभरा हुआ देखकर आचार्य ने हर्ष व्यक्त किया और उसके पुरुषार्थ प्रयास की मुक्तकंठ से सराहना की। कुछ ही दिन गुरु सान्निध्य में रहकर वह अद्वितीय ब्रह्मज्ञानी घोषित किया गया। लंबे समय से ग्रंथ परायण में निरत छात्रों ने कुछ ही समय में आरुणि को निष्णात घोषित किए जाने का कारण पूछा तो कुलपति ने इतना ही कहा—''ज्ञान की पूर्णता अनुभव, अभ्यास और आदर्श को जीवन में घुला लेने पर ही उपलब्ध होती है। मात्र पठन-पाठन उसके लिए पर्याप्त नहीं माना जाता।''

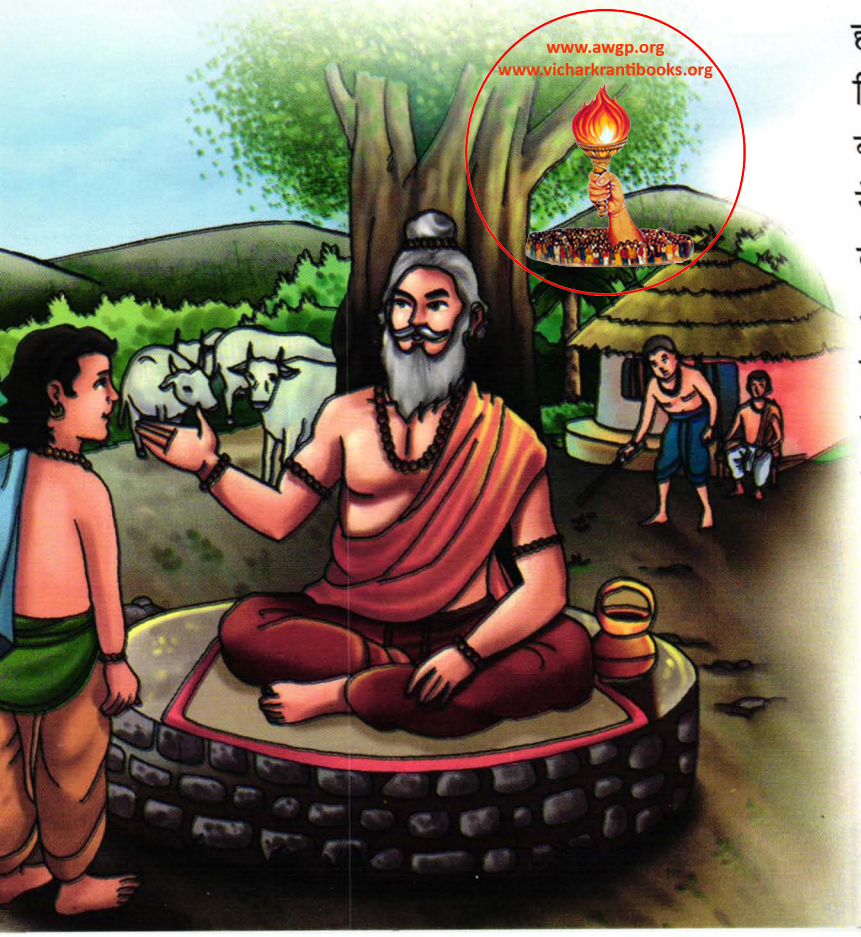

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुलाब का चिंतन

जाड़े का मौसम था और सुबह का समय था। ठंढी हवा चल रही थी। एक पत्ते ने हँसते हुए गुलाब को देखा और उससे बोला—"यह भी कोई जीवन है, माली आता है और समय नहीं देखता। जब भी आता है तुम्हें तोड़कर ले जाता है। इतने से थोड़े समय में भी कोई आनंद है। मैं रोज देखता हूँ कितने गुलाब खिलते हैं और माली उन्हें रोज तोड़कर ले जाता है।" गुलाब ने बड़े शांत स्वर में उत्तर दिया—"भाई! जीवन का अर्थ है—सच्ची सुगंध। इस प्रकार चारों ओर सुगंध फैलाते हुए यदि हम नष्ट भी होते हैं तो यही तो अमरता है।"

हमारा जीवन किसी न किसी तरह दूसरों के काम आ सके तो हम अपने को धन्य समझें।

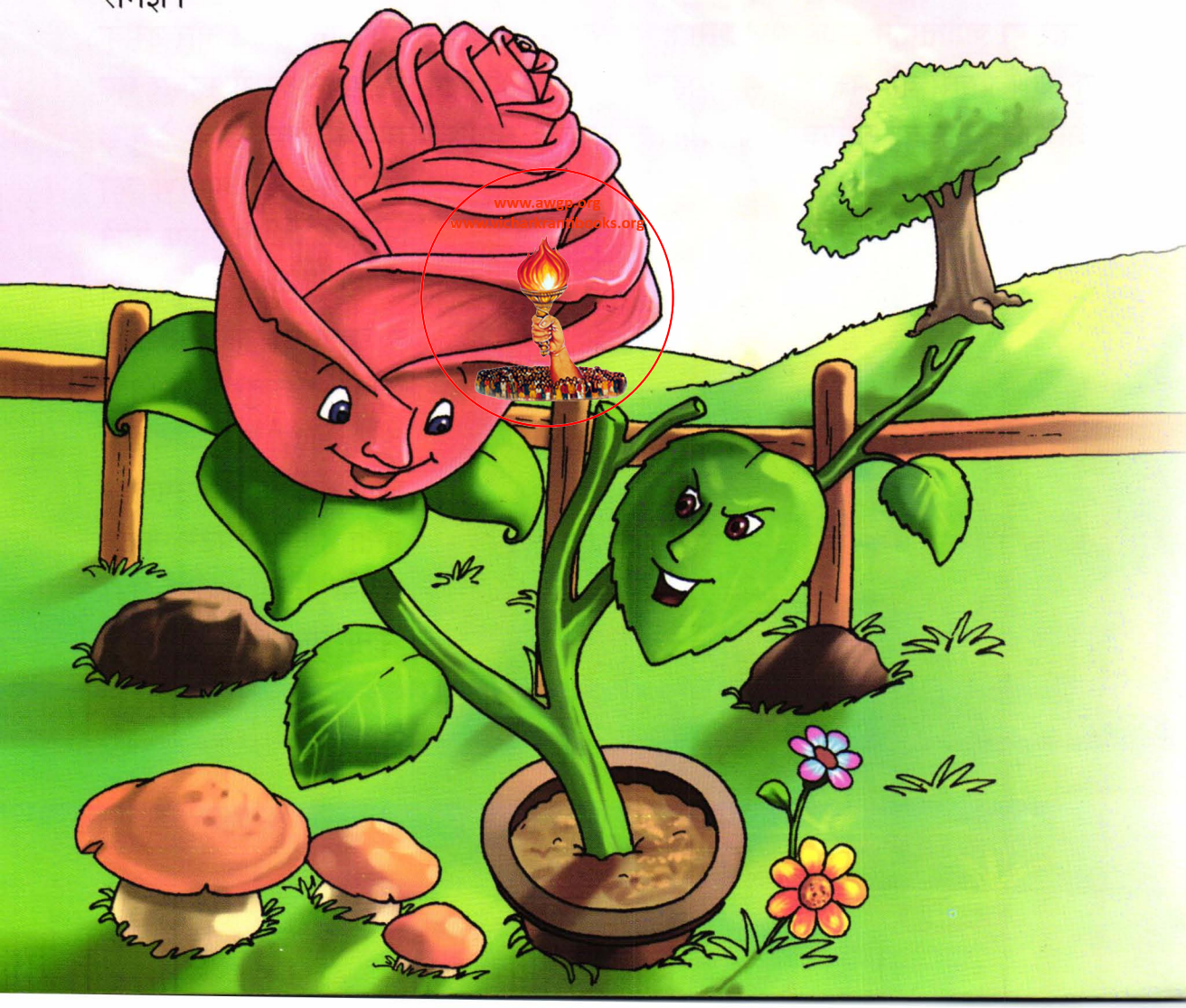

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अकारण का भय दुःखदायी

एक बार की बात है कि एक रानी सरोवर में स्नान कर रही थी। उनका हार सरोवर के किनारे पर रखा था जिसकी एक दासी रखवाली कर रही थी। स्नान करते काफी समय बीत गया। इधर दासी को नींद आ गई। इस बीच पेड़ पर बैठा हुआ बंदर उस हार को उठा ले गया। दासी की आँख खुली तो हार गायब था। खुद चोरी के इलजाम से बचने के लिए चोर-चोर चिल्लाने लगी। सिपाही सुनकर उस ओर दौड़ पड़े।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उधर एक किसान जा रहा था। सिपाहियों को अपनी ओर आते हुए देखकर वह डर गया और वहाँ से भागने लगा। सिपाहियों को पक्का विश्वास हो गया कि यही चोर है। उसे पकड़कर खूब पिटाई की और जेल में बंद कर दिया। दूसरे दिन हार एक पेड़ पर टंगा हुआ मिला, तब बेचारा किसान कहीं जेल से छूटा।

अकारण भय करना भी कभी-कभी गलत ही होता है। सत्य के समर्थन में मनुष्य को दृढ़ता और धैर्य से काम लेना चाहिए। यदि तुम सच्चे हो तो डरना नहीं चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंधे-पंगे का जोड़ा

एक गाँव में आग लग गई। सभी आदमी तो सुरक्षित भाग निकले, पर दो वृद्ध ऐसे थे जो भाग नहीं सकते थे—एक अंधा, एक पंगा। दोनों ने एकता स्थापित की, अंधे ने पंगे को कंधे पर बिठा लिया, पंगा रास्ता बताने लगा और अंधा तेज दौड़ने लगा। दोनों सकुशल बाहर आ गए। सहयोग का अर्थ ही है—अनेक तरह की सामर्थ्यों से एक पूरी शक्ति का पैदा होना।

सहयोग के कारण एकदूसरे के कार्य बहुत आसानी से होते रहते हैं। परस्पर सहयोग से रहना चाहिए इसमें सभी का लाभ छिपा रहता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कथा सुनी, डाकू बदला

एक संत अपनी कथा में करुणा भरे शब्दों में दुष्कर्मों और सद्कर्मों के परिणाम बता रहे थे। श्रोताओं में एक डाकू भी बैठा था जिसने कथा के तुरंत बाद पंडितजी तथा आए हुए धनवान श्रोताओं को लूटने की योजना बनाई थी। अनायास ही उसने अजामिल, गणिका, तुलसीदास, बिल्वमंगल का जीवन बदलने व उनके उद्धार की चर्चा सुनी तो वह अंदर तक सहम गया। जिन मार्मिक शब्दों में ये कथाएँ सुनाई गईं थीं, उसने उसे अपने दुष्कर्मों पर चिंतन व पश्चात्ताप करने को प्रेरित किया। कथा समाप्ति के तुरंत बाद वह पंडितजी के चरणों में गिर गया, अपने पिछले पापों की जानकारी कराई व आगे के लिए जीवन सुधारने की दिशा पूछी। उन निर्देशों ने उस डाकू का जीवन बदल दिया। इसके बाद वह प्रभु की भक्ति और प्रेम में जीवन बिताने लगा व जो पापों की खाई उसने खोदी थी, सेवा-परमार्थ द्वारा उसे पाटने लगा। उसने बुरे कर्म करने सदा के लिए छोड़ दिए।

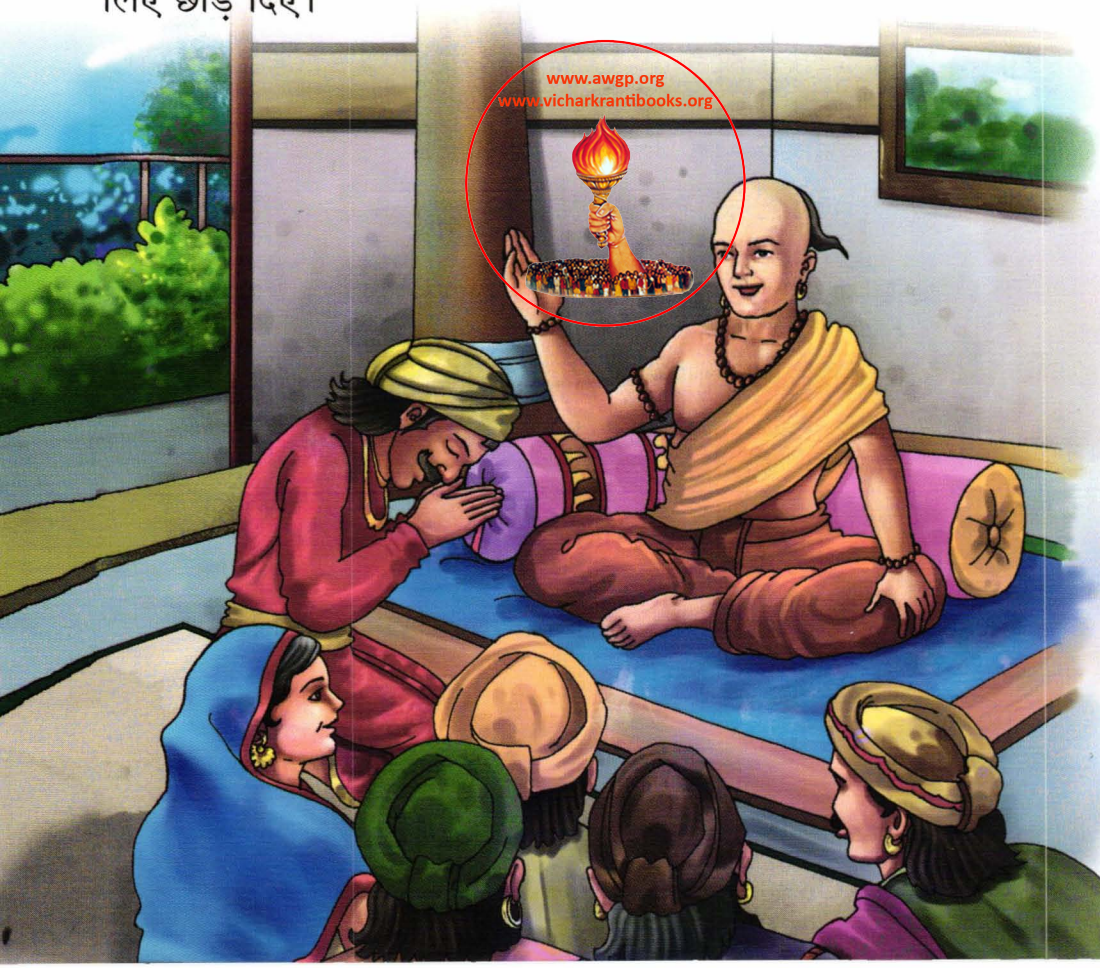

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोभी राजा

महाराज संजय के कोई संतान न थी, इससे वे बड़े दुखी रहा करते थे। इसके लिए उन्होंने ब्राह्मणों की बड़ी सेवा की। ब्राह्मणों ने नारद भगवान से राजा की इच्छा पूरी करने की याचना की। नारद ने राजा से पूछा—"तुम्हें कैसा पुत्र चाहिए?" राजा को लोभ आ गया। बोले—"मेरा बालक ऐसा हो जिसका थूक, मल-मूत्र सभी स्वर्णमय हो।" एवमस्तु कहकर नारद चले गए।

कुछ दिन में इन्हीं गुणों से संपन्न बालक पैदा हुआ। उसका नाम स्वर्णष्ठीव रखा गया। विचित्र बालक की खबर चारों ओर फैल गई। चोरों ने सुना तो एक रात बालक का अपहरण कर चोर ले गए। पर उनमें इस बात का झगड़ा हो गया कि पहले कौन बालक को अपने पास रखे? आखिर यह तय हुआ कि बालक के पेट से जो भी सोना निकला करेगा आधा-आधा बाँट लेंगे। एक दिन राजा के सिपाही बालक को ढूँढ़ते चोरों तक पहुंच गए और पकडकर राजा के पास ले आए। राजा को बालक मिल गया परन्तु उन चोरों को मौत की सजा मिली। लोभ ही पाप की जड़ है, यह सोचकर राजा बड़े दुखी हुए।

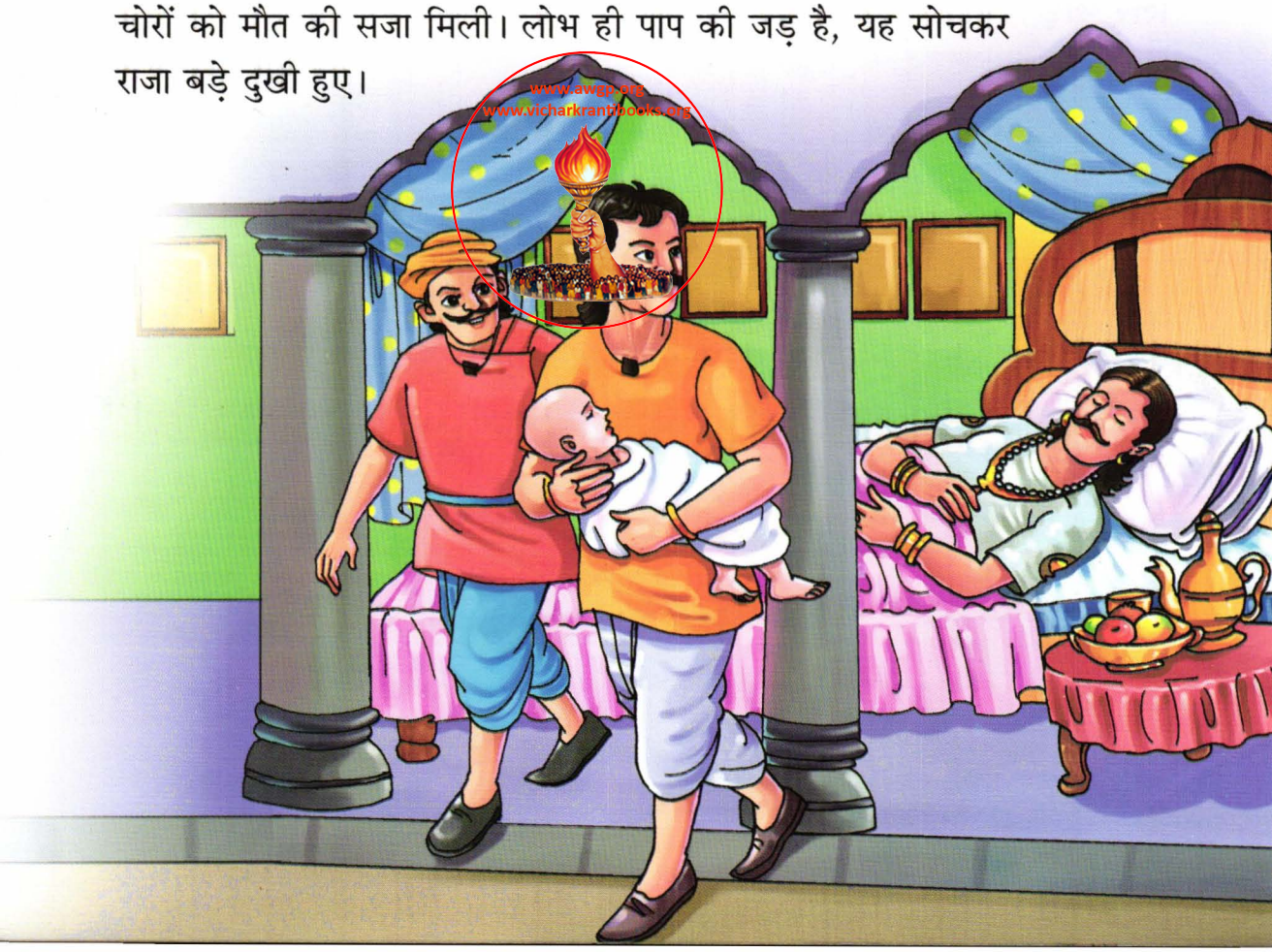

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रत्नों से श्रेष्ठ चक्की

एक बार एक महात्मा राजा के महल में राजा से मिलने आए। तभी राजा ने महात्मा को अपने हीरे-मोतियों से भरा खजाना दिखाया। महात्मा ने पूछा—"राजासाहब इन पत्थरों से आपको कितनी आय होती है?" राजा ने कहा—"आय नहीं होती बल्कि इनकी सुरक्षा पर खरच करना होता है।" फिर एक दिन महात्मा राजा को एक किसान की झोंपड़ी में ले गया। वहाँ एक स्त्री चक्की से अनाज पीस रही थी। महात्मा ने उसकी ओर संकेत कर कहा—"पत्थर तो चक्की भी है और तुम्हारे हीरे-मोती भी। परंतु इसका उपयोग होता है और यह नित्य पूरे परिवार का पोषण करने योग्य धन भी दे देती है। तुम्हारे हीरे-मोती तो किसी उपयोग में भी नहीं आते हैं। उन्हें यदि दूसरे लोगों की मदद में खरच करोगे तो सुरक्षा करने के खरच से तो बचा ही लोगे, बदले में लोगों की श्रद्धा और प्यार भी मिलेगा और भगवान की कृपा भी बहुत सारी मिलेगी।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गिरगिट की पोल खुली

एक बार चार पैरों वाले सभी जानवर बैठे हुए सभा कर रहे थे। तभी उनके मन में यह प्रश्न उठा कि उनमें सबसे बड़ा कौन है? सभी अपने को बड़ा बताने लगे। तब वे निर्णय कराने के लिए ब्रह्माजी के पास पहुँचे। ब्रह्मा जी ने इसके लिए दौड़ की प्रतियोगिता रख दी और कहा—"जो एक मील की दौड़ में सबसे पहले—निर्धारित शिला पर जा पहुँचेगा उसी को बड़ा माना जाएगा।" जानवरों में छोटे-बड़े सभी थे। उनमें एक धूर्त भी था गिरगिट। प्रतिस्पर्द्धा में तो वह भी शामिल था। पर दौड़कर आगे निकल जाने की हिम्मत ताकत उसमें न थी। सो उसने धूर्तता से काम लिया और बाजी जीतने की ठानी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मोटा बंदर आगे निकल जाएगा, यह देखकर गिरगिट उसकी पूँछ से इस तरह चिपक गया कि बंदर को इस नए साथी का पता तक न चला। दौड़ पूरी हुई। चट्टान पर पहुँचकर गिरगिट पूँछ छोड़कर उछला और बंदर से पहले ही जा बैठा। बंदर ने बैठने की कोशिश की तो आँखें लाल-पीली करते हुए बोला—"देखते नहीं मैं पहले से ही यहाँ बैठा हूँ।"

गिरगिट की जीत घोषित कर दी गई। पर जब ब्रह्माजी को सारी बात का पता मिला तो वे बहुत क्रुद्ध हुए और कहा—"तुझे पीढ़ियों तक गलत ठहराया और अपमानित किया जाता रहेगा। यहाँ तक कि धूर्तों को तेरी उपमा देकर अपमानित किया जाया करेगा। मन के पाप के कारण तेरा शरीर भी जहरीला बन जाएगा। तेरा रंग भी थोड़ी-थोड़ी देर बाद बदलता रहेगा।" तभी से जहरीला गिरगिट रंग बदलता रहता है। यह मुहावरा भी प्रचलित हो गया—'गिरगिट की भाँति रंग बदलना।' अभी भी गिरगिट को विश्वास का पात्र नहीं समझा जाता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विपत्ति का वरदान

एक बार भगवान कृष्ण कुंती पर बड़े प्रसन्न हुए। उस दिन उन्होंने कुंती से पूछ ही लिया—"भद्रे, अपनी कोई इच्छा हो तो बताओ। मैं उसे पूरा करूँगा।" कुंती बोली—"भगवन्! यदि आप मुझ पर संतुष्ट हैं तो मुझे कष्ट-कठिनाइयाँ ही दीजिए।" कृष्ण ने पूछा—"कुंती आखिर इसमें तुझे क्या मिलेगा?" कुंती ने उत्तर दिया—"कठिनाइयों में ही व्यक्ति भगवान को याद किया करता है। अत: मुझ पर सदा कष्ट बने रहेंगे तो हे भगवन्! मैं आपको याद करके अपने ध्यान में आपका दर्शन तो करती रहूँगी।" सच ही मुसीबत में ही व्यक्ति भगवान को याद करता है।

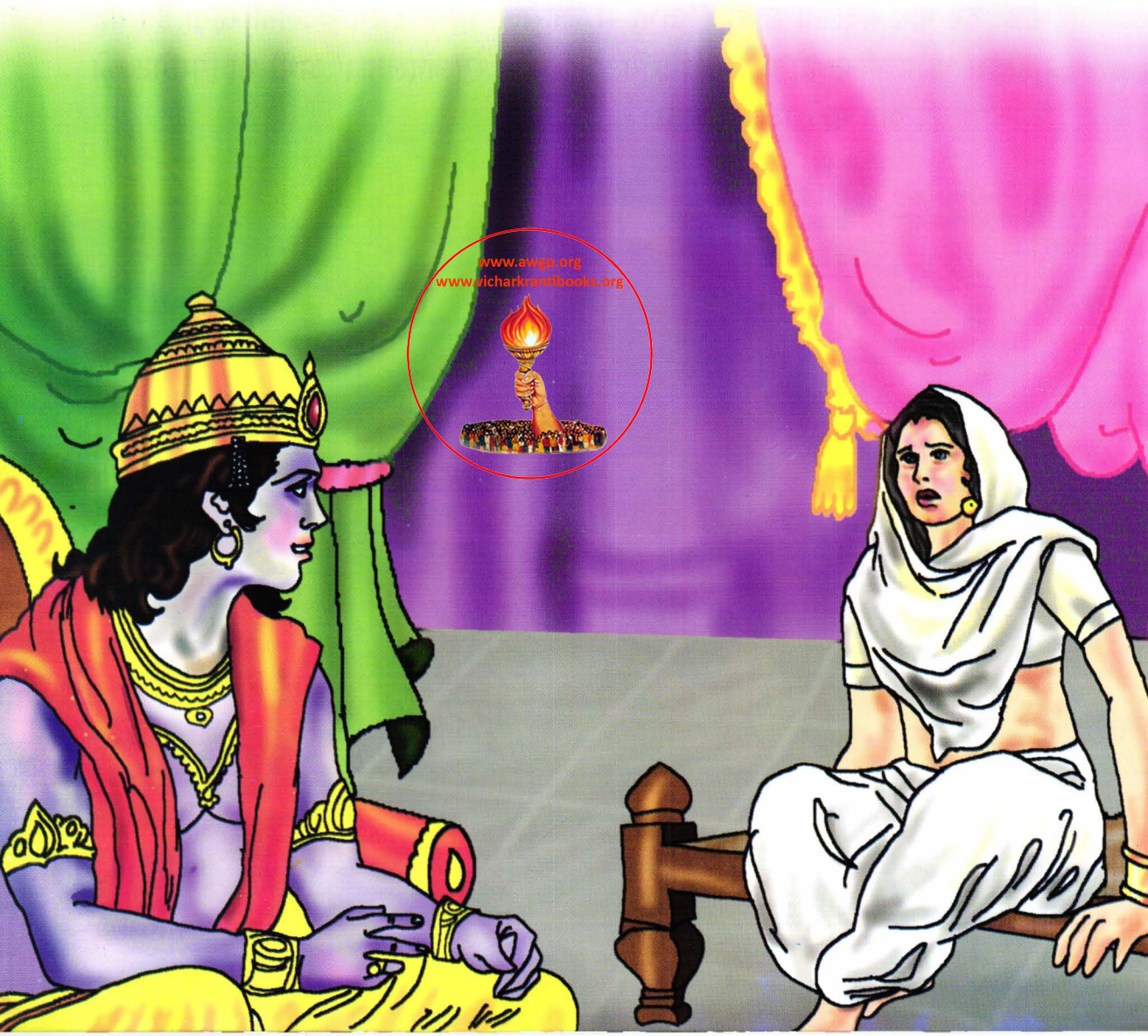

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालक की सत्यनिष्ठा

गांधी जी को बचपन में खेलों में कोई रुचि तो नहीं थी फिर भी वे स्कूल का नियम पालन करने के लिए समय पर खेल के मैदान में जाया करते थे। एक दिन शनिवार था। उस दिन प्रात:काल कक्षाएँ लगीं और सायं समय चार बजे खेलकूद आरंभ हुआ। बालक मोहन के पास घड़ी थी नहीं और बारिश के दिन थे। अत: उन्हें समय का ठीक-ठीक ज्ञान न हो सका और वे खेलों में देर से पहुँचे। प्रधानाध्यापक ने देर से आने का कारण पूछा तो गांधी जी ने सही कारण बता दिया किंतु प्रधानाध्यापक ने उनकी बात का विश्वास नहीं किया और एक आना जुर्माना कर दिया।

गांधी जी रो उठे। तो प्रधानाध्यापक ने कहा—"तुम्हारे पिताजी तो बड़े आदमी हैं, उनके लिए एक आना जुर्माना भरना कोई बड़ी बात नहीं है।" मैं इसलिए नहीं रो रहा हूँ गांधी जी ने कहा—"बल्कि मुझे रोना इस बात पर आ रहा है कि मुझे झूठा समझा गया।" प्रधानाध्यापक ने इस भोले और सरल हृदय बालक की सत्यनिष्ठा से प्रभावित होकर उनका जुर्माना माफ कर दिया।

बचपन की ये ही छोटी-छोटी बातें व्यक्ति को कहाँ से कहाँ पहुँचा देती हैं। सत्य बोलने का शिक्षण मोहनदास को माता-पिता से मिला। इसको पोषण हरिश्चंद्र के नाटक से मिला एवं उन्होंने अपने सारे जीवन को ही सत्य बोलने की प्रयोगशाला बनाकर यह प्रमाणित कर दिया कि बचपन के श्रेष्ठ संस्कार ही व्यक्ति को महान बना देते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धर्मराज का सेवाधर्म

भगवान श्रीकृष्ण से एक बार एक व्यक्ति ने प्रश्न किया—"आप युधिष्ठिर को धर्मराज क्यों कहते हैं?" भगवान श्रीकृष्ण बोले—"महाभारत का युद्ध चल रहा था। तब युधिष्ठिर सायंकाल वेश बदलकर कहीं जाया करते थे। पांडवों ने इस रहस्य का पता लगाने के उद्देश्य से एक दिन उनका पीछा किया तो पता चला कि वे युद्धक्षेत्र में पड़े घायलों की सेवा-शुश्रूषा किया करते थे। शेष तीनों भाइयों ने उनके वेश बदलकर यह शुभ कार्य करने का कारण पूछा तो वे बोले—इनमें से कई कौरव पक्ष के हैं, जो

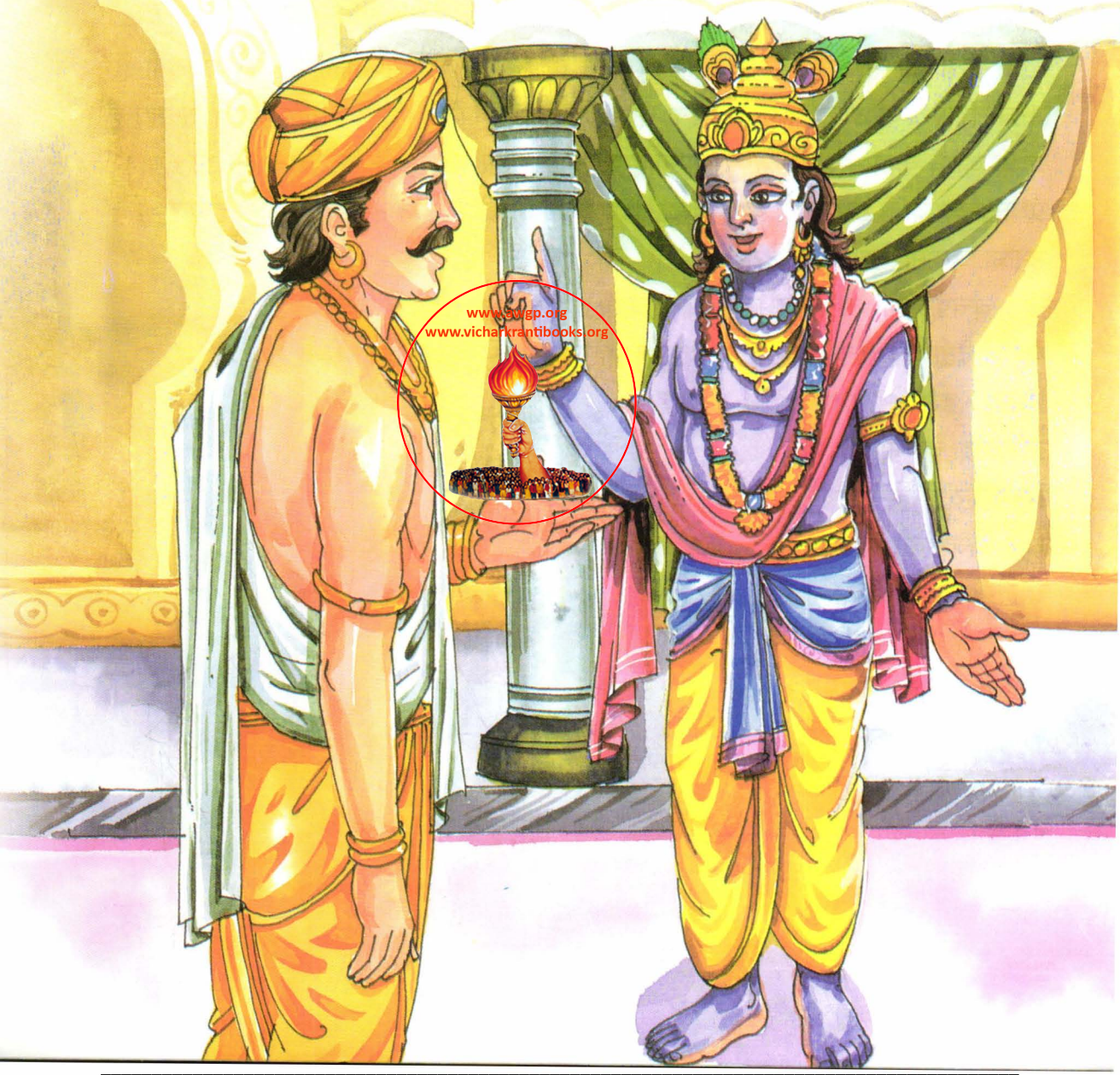
www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि मैं प्रकट रूप में होता तो मुझे अपना कष्ट न बताते और मुझे सच्ची सेवा करने का अवसर ही न मिलता, इसलिए ऐसा करना पड़ा।'' यह घटना सुनाने के बाद श्रीकृष्ण ने बताया—''धर्म और परमार्थ एकदूसरे के सहारे पूर्ण किए जा सकते हैं, इसी से युधिष्ठिर धर्मराज कहलाते हैं और धर्ममंत्रणा में उन्हें सबसे ऊँचा स्थान दिया जाता है।''

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाव के भूखे हैं भगवान

एक यहूदी अनपढ़ था और ग्रामीण भी। प्रायश्चित्त पर्व पर सबको प्रार्थना करते देखकर वहीं बैठ गया और वर्णमाला के अक्षरों का ही पाठ करता हुआ भावना करने लगा—"हे प्रभु! मुझे तो कोई मंत्र याद नहीं, इन अक्षरों को जोड़कर तुम्हीं मंत्र बना लेना। मैं तो तुम्हारा दास हूँ, पूजा के लिए नए भाव कहाँ से लाऊँ?" जब तक दूसरे लोग प्रार्थना करते रहे, वह ऐसे ही भगवान का ध्यान करता रहा।

सायंकाल जब सब सामूहिक प्रार्थना में सम्मिलित हुए तो धर्मगुरु रबी ने उस ग्रामीण को भक्तों की पंक्ति में सबसे आगे बिठाया। यह देखकर उसके साथी ने विरोध तथा आपत्ति की—"श्रीमान जी! इसे तो मंत्र भी अच्छी तरह याद नहीं।" फिर सबसे आगे क्यों बिठाया है? "तो क्या हुआ" रबी ने आर्द्र कंठ से कहा—"इसके पास शब्द नहीं भाव तो हैं।" भगवान व्यक्ति के मन के भाव देखते हैं।

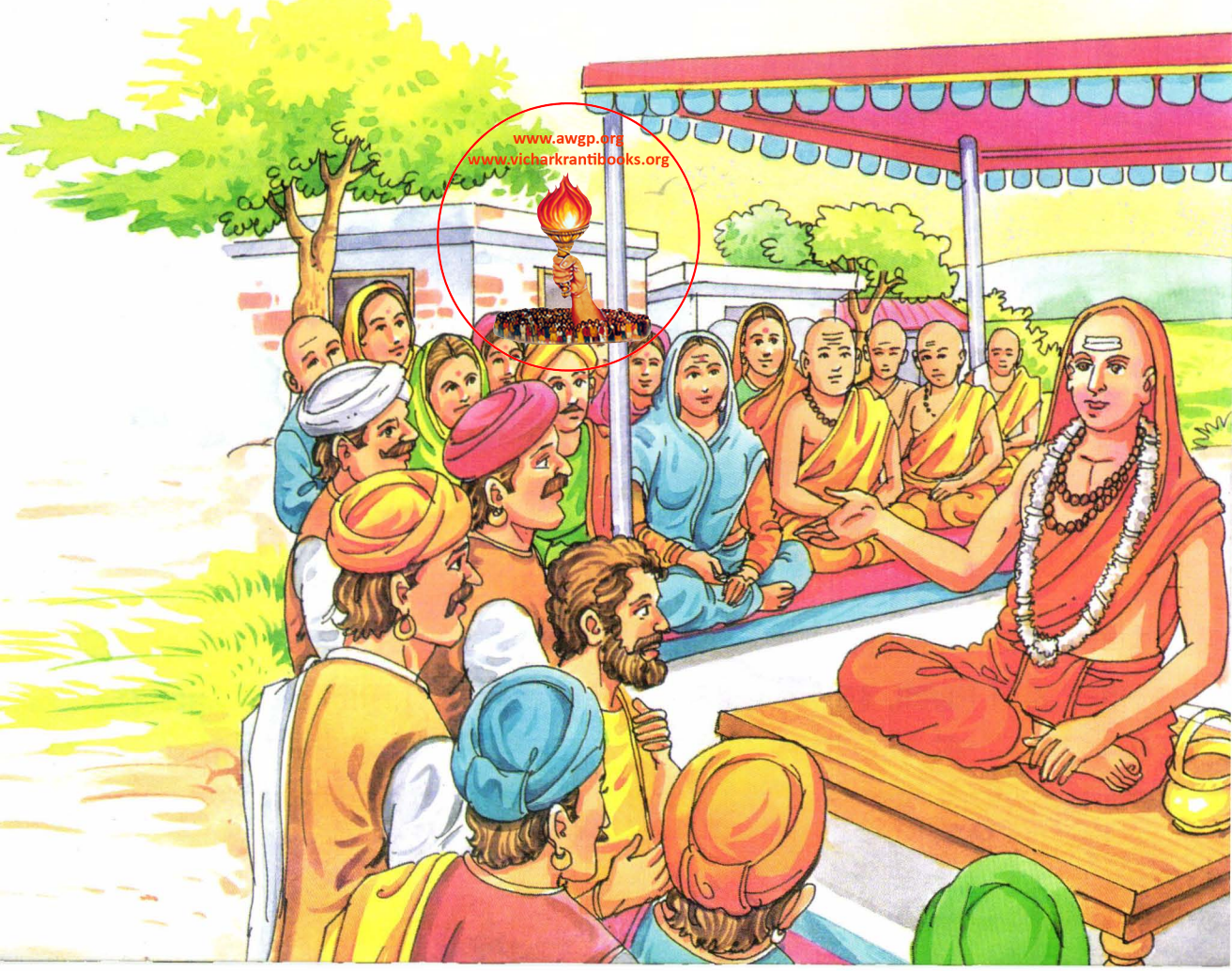

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तितली और मधुमक्खी

एक बाग में मधुमक्खी और तितली एक ही पेड़ पर रहती थीं। अकसर वाटिका में फूलों के पास ही मिल जातीं। एकदूसरे की कुशल पूछतीं और अपने काम पर लग जातीं।

जब बरसात आई तब लगातार झड़ी लगी थी। तितली उदास बैठी थी। मधुमक्खी ने पूछा—"बहन! क्या बात है? ऐसे सुंदर मौसम में उदासी कैसी?"

तितली बोली—"मौसम की सुंदरता से पेट की भूख अधिक प्रभावित कर रही है। कहीं भोजन लेने जा नहीं सकती, इसीलिए परेशान हूँ।"

मधुमक्खी बोली—"ऐसे समय के लिए कुछ बचत क्यों नहीं की? कल की बात न सोचने वाले यूँ ही परेशान होते हैं।" ऐसा समझाकर मधुमक्खी ने संचित कोश में से तितली की भी भूख शांत की।

अपनी कमाई में से कुछ न कुछ बचत करते रहना चाहिए। बचत कठिन समय में काम आती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपकार का प्रतिफल

एक गाँव में एक बार कुछ ग्रामीण एक साँप को मार रहे थे। तभी उधर आ पहुँचे संत एकनाथ और बोले—"भाइयो! इसे क्यों पीट रहे हो? यह अपने कर्मों के कारण साँप बना है। यह भी एक आत्मा ही तो है।" एक युवक ने कहा—"आत्मा है तो फिर काटता क्यों हैं?" एकनाथ ने कहा—"तुम लोग सर्प को यदि नहीं मारो तो वह भी तुम्हें नहीं काटेगा।" लोगों ने एकनाथ के कहने से साँप को छोड़ दिया।

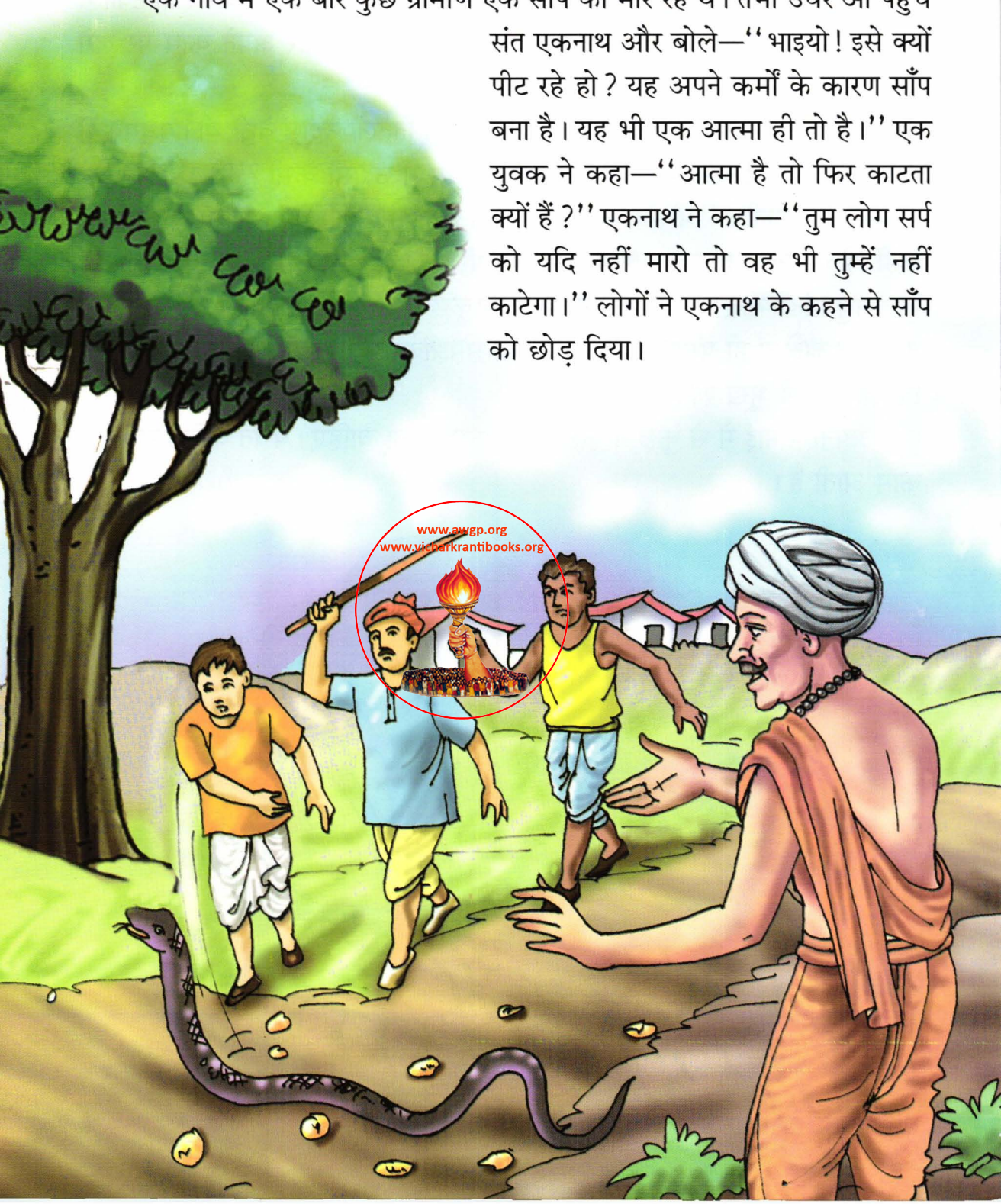

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुछ दिन पीछे एकनाथ अँधेरे में नदी स्नान करने जा रहे थे। तभी उन्हें सामने फन फैलाए खड़ा सर्प दिखाई दिया, उन्होंने उसे बहुत हटाना चाहा, पर वह टस से मस न हुआ। एकनाथ मुड़कर दूसरे घाट पर स्नान करने चले गए। उजाला होने पर लौटे तो देखा कि जिस स्थान पर साँप रास्ता रोके था उस स्थान पर बरसात के कारण एक गहरा खड्ड हो गया है। सर्प ने न बचाया होता तो एकनाथ उसमें कब के समा चुके होते।

किसी के साथ भलाई करने का अच्छा फल अवश्य मिलता है।

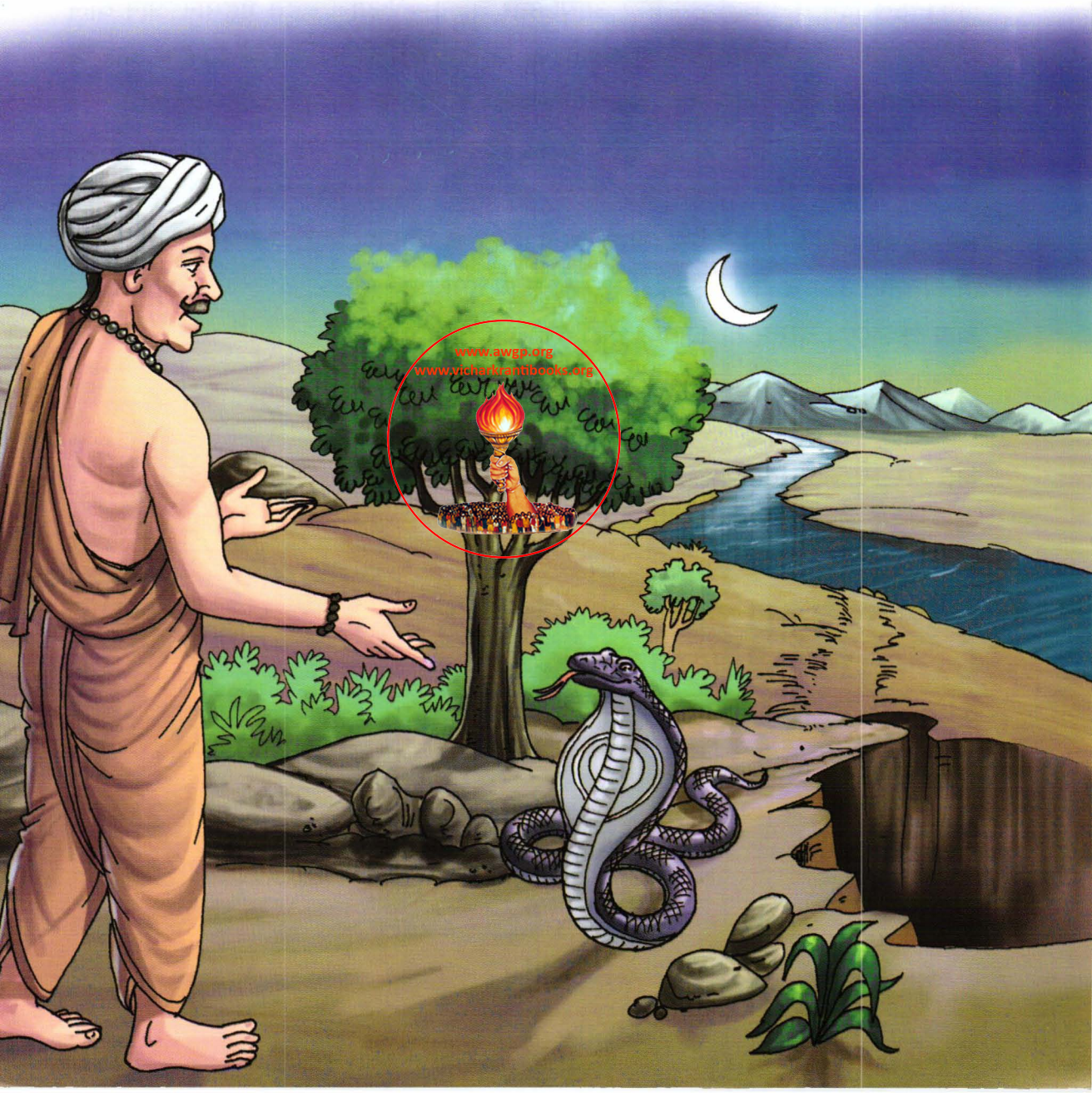

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बरतनों के बच्चे

एक ठग ने एक लोभी सेठ से अपने घर दावत देने के लिए कुछ बरतन माँगे। सेठ से मना नहीं किया गया और उसने टूटे-फूटे पीतल के बरतन उसे दे दिए। ठग थोड़े दिन बाद वह बरतन तो लाया ही उनके साथ उनकी छोटी शक्ल के बरतन और लाया तथा बोला—"आपके बरतनों ने बच्चे दिए हैं, सो ये भी आपके ही हैं।" लाभ किसे बुरा लगता है। सेठजी ने गाँव भर में बात फैला दी, हमारा भाग्य तो देखो, बरतन भी बच्चे देने लगे। कुछ दिन बाद वही ठग फिर आया और बोला—"आज बहुत मेहमान आने वाले हैं, सो सोने-चाँदी के बरतन मिल सकते, तो बहुत अच्छा होता।" बच्चे साथ में आने के लालच में सेठ जी ने प्रसन्नतापूर्वक सोने-चाँदी के बरतन ठग को दे दिए।

अबकी बार ठग ने वापस करने में कई दिन लगा लिए। सेठ जी ने तकाजा भेजा। ठग खाली हाथ, मुँह लटकाए हुए आया, बोला—"आपके बरतन जाते ही बीमार पड़ गए। उनके इलाज में ढेरों पैसा खरच हुआ। फिर वे मर गए, तो अंत्येष्टि और ब्राह्मण भोजन में सैकड़ों रुपये लग गए। सो आप चुकाइए। बरतन तो आपके थे।" सेठ जी बोले तू झूठ बोलता है, तो ठग ने कहा— "आपका भाग्य बढ़िया है। जिनके बरतन बच्चे दे सकते हैं, उनके बरतन बीमार पड़ें और मर भी जाएँ, तो क्या आश्चर्य!

बहुत से लोगों ने पहली अफवाह सुनी थी, वे ठग की बात का समर्थन करने लगे।

कंजूस इसी प्रकार ठगे जाते हैं। अपनी दुर्बुद्धि के कारण वे अपनी ही हानि करते हैं।

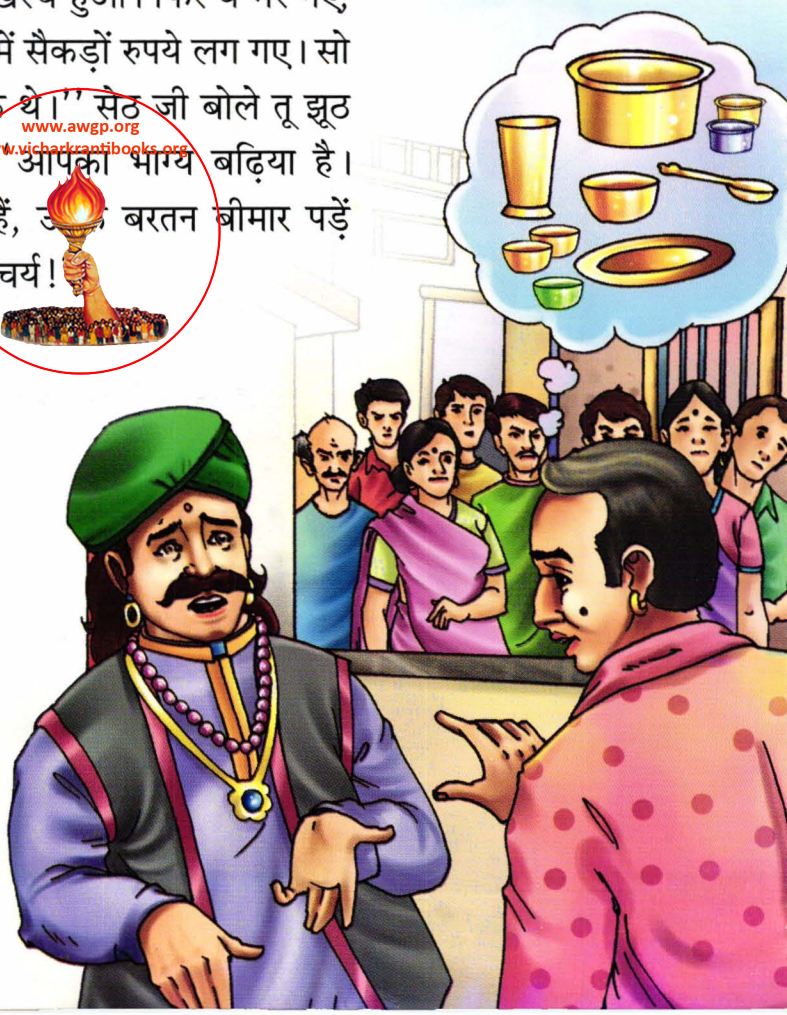

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org